प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था : एक समीक्षात्मक अध्ययन

धर्मेन्द्र जैसवारा*

डॉ0 छत्रसाल सिंह**

सारांश :–मानव जीवन में शिक्षा एक अनिवार्य पहलू है। सभ्य मानव का शिक्षा से अटूट सम्बन्ध रहा है। शिक्षा और मानव का एक दूसरे से पारस्परिक कारण और परिणाम का सम्बन्ध है। किसी भी समाज का स्वरूप उसकी शिक्षा–व्यवस्था के स्वरूप को निर्धारित करता है। इस प्रकार हम शिक्षा एवं मानव को अविछिन्न रूप से गुँथा हुआ पाते हैं। वास्तव में शिक्षा मानव जीवन को प्रकाश पुंज से उद्दीपन कर उत्कृष्ट जीवन की कला सिखाती है। यह मानव को उसके स्वधर्मानुकूल दायित्वों को जागृत कर नव विकसित मानवीय मूल्यों एवं चारित्रिक व्यवहार पर खरा उतरने, कर्तव्यों के परिपालन योग्य बनाने और मानव के सर्वागीण विकास में मानसिक, शारीरिक, नैतिक तथा भावनात्मक गुणों का विकास कर समाज और राष्ट्र के लिए सुयोग्य नागरिक तैयार करने का कार्य करती है।